गंगा मैया

(Mother Ganga)

निर्मला शुक्ल

हे गंगे मैया, तुम पवित्र हो, पापनाशिनी हो और हो आनन्दमयी।
भगीरथ द्वारा शंकर की जटा से तुम इस धरा को पवित्र करने आईं ॥
हिमालय से छल छल करती पृथ्वी पर तीव्रगति से उतरती।
पर काशी पहुंचते पहुंचतें तुम्हारी यह कैसी हो जाती दुर्गति ?

कारखानों का रसायन और गन्दी नालियों का पानी।
अधजले शव समाकर तुममें कर रहे हैं दूषित मनमानी।
मिलता है पुण्य तुम्हारे जल के पान व स्नान में।
पर अब रूग्ण हो जाने का डर रहता है ध्यान में ॥

प्रातः तुम्हारे जल में प्रतिबिम्बित होता हैं रवि।
तब मन को लुभाने वाली होती है तुम्हारी छवि ॥
एक ओर तुम्हारे रूप को निरख मन हो जाता है शान्त।
वहाँ घाट पर जलतीं चितायें देख मन होता है क्लान्त ॥

प्राचीन राजाओं द्वारा निर्मित घाट हैं तुम्हारी साज।
पर मलमूत्र एंव कूडा कर्कटों से भरी मिलती हैं आज ॥
भक्ति से ओतप्रोत बहुत से दानी लुटाते हैं धन अपार।
धन लूटने वाले पंडों की भी रहती है वहाँ पर भरमार ॥

तुम्हारे घाट पर पशु पक्षी उन्मुक्त विचरते है मस्त।
शरण में तुम्हारे पडे रहते दुखी, पीडित, गरीब त्रस्त ॥
जन मानस की भीड सदा श्रद्धा से करती है सम्मान।
कोई नहाता,कोई पूजता,कोई बजाता,कोई गाता गान ॥

सूर्यास्त के समय छह बडे थालों में होती तुम्हारी आरती।
भक्ति पूर्ण वातावरण में इकट्ठे होते हैं लाखों में भारती ॥
रात्रि मे शंखनाद, व घन्टा ध्वनि के साथ भक्तगण पंखा करते।
आनन्दमय नर-नारी जल में फूल चढाते व दीप-दान करते ॥

निशा घाट की गन्दगी को अपने काले आँचल से लेती है ढक।
फैल जाती है चारों ओर अगरबत्ती और धूप की सुन्दर महक ॥
स्निग्ध वातवरण में उस समय का तुम्हारा सौन्दर्य है वर्णनातीत।
जी चाहता है वह सुरभित पावन बेला कभी न जाये बीत ॥

हे गंगे मैया,
तुम भारत के लिये एक महान देन हो, तुम्हारी शोभा है अपरम्पार।
दूषित होने से तुम्हें बचा नहीं पा रहे हैं, भारतीयों को है धिक्कार ॥
सदियों से तुम्हारी पवित्रता की गाथा गाते रहे है देव और मुनिगन।
शक्ति दो मैया, तुम्हारी सेवा में हम अब लगा दें अपना तन मन धन ॥